# 1857 का संग्राम UPRISING OF 1857: स्वरूप, कारण, परिणाम.

## CAUSES, NATURE, FAILURE:

FIRST WAR OF INDEPENDENCE

लार्ड केनिंग का समय | अशोक मेहता ('1857-द ग्रेट रेबेलियन') ने लिखा कि इस विद्रोह के पीछे सैनिक ही थे पर इसमें जनता भी शामिल हुई | तेज़ी से फैलना भी इसका प्रमाण है | इसमें हिन्दू-मुस्लिम एकता भी इसी की निशानी है | स्पष्ट है कि इसकी प्रकृति राष्ट्रीय थी | आउट्रम ने इसे राष्ट्रीय आन्दोलन न माना और इसे मुस्लिमों का प्रयास कहा | सर जान लोरेंस ने इसे सीधे मात्र एक सैनिक विद्रोह क़रार दिया जिसका कारण चर्बी वाले कारतूस थे | राकिंसन ('द ब्रिटिश एचीवमेण्ट इन इंडिया') ने भी इसे राष्ट्रीय स्वरूप की क्रांति मानने से इन्कार किया | सर जान सीले ने भी इसे पूर्णत: सिपाही विद्रोह बताया | पी० ई० राबर्ट्स भी यही लिखता है | डॉ० आर० सी० मजुमदार ('द सिपॉय म्यूटिनी एण्ड रिवोल्ट ऑफ 1857') ने भी इसी मत को माना है | मौलाना आज़ाद ने आगे बढ़कर इसकी प्रकृति को जनविद्रोह के रूप में रेखांकित किया | वी० डी० सावरकर ('द इंडियन वार ऑफ इंडिपेन्डेंस') ने इसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम पुकारा |

दूर तक इसका नेतृत्व तो सिपाहियों ने ही किया | अपवाद स्वरूप स्थानीय ज़मींदारों ने भी हरकतें की थीं | तीन प्रान्तीय सेनाओं में से केवल एक ने विद्रोह किया | हर प्रान्त में भी ये विद्रोह नहीं फैला | दिल्ली इस विद्रोह की रीढ़ थी परन्तु दारुल उलूम के मौलानाओं ने भी आज़ादी की बग़ावत को उभारा | बहादुर शाह ज़फ़र ने राजपूताना को संदेश भेजा कि अब देश के चुने राजाओं के सामूहिक संगठन को शक्ति हस्तांतरित करना चाहता हूँ | उस समय उसकी छवि राष्ट्रीय नेता की बन गयी थी | पूरे देश में जन असंतोष फैला था; स्थानीय कारणों से भी जनता ने इसमें भागीदारी की |

**कारण:- राजनैतिक:-** परवर्ती मुग़लों की दुर्बलता, मराठों, मैसूर, बंगाल, अवध की निर्भाजित कमज़ोर परिस्थितियों में 1757 के प्लासी-युद्ध से अंग्रेज़ों ने सौ साल पूरे कर लिये थे | असफल राजनीतिक विरोध होते रहते थे | अंग्रेज़ एक-एक करके भारतीय राज्यों पर अधिकार करने लगे | लार्ड डलहौज़ी ने 'हड़प नीति' 'गोद निषेध-प्रथा' DOCTRINE OF LAPSE के द्वारा नागपुर, सतारा, झाँसी, संभलपुर, पंजाब कर्नाटक, तंजोर बारी बारी हड़प लिए | चार्ल्स नैपियर ने तो यहाँ तक कह डाला कि अगर मैं 12 साल भारत का अधिकारी हो जाता तो एक भी राजा शेष न बचता | इन राज्यों के अपहरण के बाद राजाओं को अपमानित किया गया, किसानों पर ज़्यादा भूकर लगाया गया, बंदोबस्त-बिचौलियों को बेकार कर दिया, इनाम कमीशन (1852 ऐक्ट) द्वारा 20 हज़ार ज़मींदारों की ज़मीनें ज़ब्त कर ली गयीं, दरबारी बेसहारा हो गये; सभी लोग अंग्रेज़ों के विरुद्ध होने लगे | जान स्लीमान ने लिखा था कि अंग्रेज़ गंगा से धन चूस कर टेम्स में डाल रहे थे | लार्ड मायरा के दुष्प्रयासों से मुग़ल सम्राट के सम्मान की रस्मी 'नज़रें' बन्द हो गयीं जिसका जनता ने बुरा माना | अंग्रेज़ों की धृष्टता से सम्राट के प्रति जनश्रद्धा आहत हो रही थी | अवध के नवाब व झाँसी की रानी के प्रति अंग्रेज़ों के दुर्व्यवहार से जनता क्षुब्ध हो उठी | लुडलो ('थॉट्स ऑन द पॉलिसी ऑफ द क्रॉउन') में लिखता है कि रियासतों के विलीनीकरण के विरुद्ध भारत में ऐसी कोई नारी न थी जिसे इससे घृणा न हो और जिसने अपने बच्चे को विद्रोही न बना दिया हो |

'DOCTRINE OF LAPSE'

**आर्थिक कारण:-** अंग्रेज़ों से पहले भी हमलावर आये थे पर यहीं के होकर रह गये; अंग्रेज़ यहाँ के कभी न हुए, यहाँ का धन लूटकर वे इंग्लैण्ड ले जाते रहे | वे जिनकी भी मदद करते, उनसे पैसे लेते थे, आन्तरिक व्यापार पर उन्हीं का एकाधिकार हो गया था | भारतीयों से भेदभाव करना, व्यापार पर कर बढ़ाना, भारतीय अर्थव्यवस्था को हिला दिया था | भारत का कच्चा माल सस्ता ख़रीदकर इंग्लैण्ड से वापस पक्का माल लाकर मंहगा बेचने लगे |

ECONOMIC CAUSES

इंग्लैण्ड में 19वीं सदी में हुई औद्योगिक क्रांति में बने मालों से भारतीय बाज़ार भरा पड़ा था; जबकि भारतीय लघु व कुटीर उद्योग बर्बाद हो गए। जनता कृषि की ओर गयी जहाँ ग़रीबी थी। डॉ० ईश्वरी प्रसाद ('ए हिस्ट्री ऑव मॉडर्न इंडिया') ने लिखा कि 'भारत इंग्लैंड के लिए दुधारू गाय हो गया जबकि उसी के बेटे भूखे मरने लगे।' अंग्रेज़ों की कृषि नीति से किसान व ज़मीदार बर्बाद होने लगे। आर० सी० मजुमदार ने लिखा है कि पैतृक ज़मीदार कहीं के न रहे; बड़े भूपति पूरी तरह ख़त्म हो गये। बन्दोबस्त में लगान 50% तक बढ़ाया गया; मद्रास में ग्राम प्रथा लागू की गयी तो किसान गाँव छोड़ कर भाग गये। एस० एन० सेन ('ऐट्टीन फ़िफ़्टी सेवन') ने लिखा है कि किसान कर्ज़ से मर रहा था और बनिया से कर्ज़ लेता था। लगभग 1852 में 20हज़ार परिवार भटक रहे थे। बम्बई और उत्तर के प्रान्तों में असन्तोष पनपने लगा था।

SOCIAL & RELIGIOUS CAUSES

**सामाजिक व धार्मिक कारण:-** अंग्रेज़ भारतीयों को बर्बर मानते थे। 'कलकत्ता रिविउ' में बंगालियों को नीच कहा गया; ईसाई मिशनरीज़ बढ़ते चले जा रहे थे; भारतीय धर्मों की विद्यालयों में अवहेलना होती थी; ईसाई धर्मान्तरण काफ़ी बढ़ गया था; सर सैयद अहमद ('कॉज़ेज़ ऑव इंडियन रिवोल्ट') ने लिखा है कि दुर्भिक्ष पड़ने पर सभी यतीमों को ईसाई बना दिया गया। 'रेलिजस डिसएबिलीटीज़ ऐक्ट' (1856) में ईसाई होने वाले हिन्दुओं को सुविधाएँ दी गयीं। ईस्ट इंडिया कम्पनी के चेयरमैन मैंजिलस ने घोषणा की कि प्रभु ने भारत का साम्राज्य इसलिए हमें सौंपा है कि हमारी कोशिशों से हर भारतीय ईसाई हो जाय। 'सती प्रथा निषेध, विधवा पुनर्विवाह जैसे क़दमों को अंधविश्वासी लोगों ने धार्मिक हस्तक्षेप प्रचारित किया। रेलवे द्वारा कलकत्ता को पेशावर व बम्बई-मद्रास से जोड़ने और गंगा से नहर निकालने को जादू की अफ़वाह फैलाई गयी। उड़ाई गयी कि सरकार नमक में हड्डी चूरा मिलाती है, घी में चर्बी और कुओं में मांस मिलवाती है। सर होमग्रांट ('इन्सीडेंट्स इन द सिपॉय म्यूटिनी') में लिखा कि कोई भी भारतीय भूख के बदले ये कार्य नहीं करेगा। मालकम लूईन ('इंडियन रिवोल्ट') ने लिखा है कि हमने भारतीयों की जाति को अपमानित किया है। उनके दाय भाग-नियमों को तोड़ा है, उनकी वैवाहिक परम्परा को बदला है, उनके पावन संस्कारों की अवहेलना की है, उनके मंदिरों का धन हड़पा है, सरकारी कागज़ों में उन्हें Heathen 'धर्महीन' लिखा है, उनके राजाओं की जागीर हड़पी है, वसूलियों से देश को अस्तव्यस्त किया है, लगान वसूली में यातनाएँ दी हैं। एडवर्ड स्टनफ़ोर्ड ('दि काज़ेज ऑव द इंडियन रिवोल्ट बाइ ए हिन्दू ऑव बंगाल') ने लिखा कि 1857 के शुरू में भारतीय सेना के अनेक कर्नल्स सेना को ईसाई बनाने के दुस्साध्य कार्य में रत पाये गये; जब यह काफ़ी बढ़ गया तो दोनो धर्मों के अनुयायी सिपाही चौंक उठे, विरोध करने पर उनको पद का लोभ देते; फलस्वरूप असंतोष बढ़ा। रेवरेंड केनेडी ने लिखा था कि जब तक भारत हमारा साम्राज्य है, केप कोमारिन से हिमालय तक ईसाई धर्म को अपनाता नहीं, हमारा प्रयास ज़ोरों से जारी रहना चाहिए।

ADMINISTRATIVE CAUSES

**प्रशासकीय कारण:-** गुलाम हुसैन खान ने लिखा है कि अंग्रेज़ों की प्रशासकीय ख़ामियों से लोग घृणा करने लगे। अंग्रेज़ जनता से मिलते न थे, दोनो की भाषाओं व परंपराओं में अन्तर था, उनकी नीतियाँ अपरिचित थीं, उनकी व्यापारनीति भेदभावपूर्ण थी, सेना में भर्ती मुश्किल थी, नौकरी के साधन न थे। सर सैयद अहमद ने कहा कि विद्रोह का सबसे बड़ा कारण भारतीयों को विधानसभा और प्रशासनतंत्र में दाख़िल न होने देना था; मुस्लिम इसलिए सर्वाधिक असंतुष्ट थे। जुर्म के लिए कोड़ों की सज़ा ख़त्मकर कैद की सज़ा शुरु करना भी लोगों को बुरा लगा।

**सैनिक कारण:-** 1849 तक अंग्रेज़ सेना में भारतीय सिपाही दर्जनो बार विद्रोह कर चुके थे जिसका कारण कम वेतन व भत्ते तथा अन्य कठिनाइयाँ थीं।

डलहौजी के समय में भी सिंध व बर्मा में सेना में विद्रोह हुए। 'रेड एण्ड पम्फलेट' (1857) के अनुसार 'उसी पल से विद्रोह के लिए समय व अवसर की प्रतीक्षा रही।' शेख हिदायत अली ने लिखा था कि 1857 के सिपाही विद्रोह के मुख्य कारणों में (i) अवध के अपहरण के समय हुआ सिपाहियों का अपमान (ii) पंजाब छिनने के बाद सिख व मुस्लिम सिपाहियों से दाढ़ी व केश मुड़वाने को कहना (iii) 1856 के आदेश के तहत भर्ती के बाद सिपाही को कहीं भी जाने की कसम। ईसाई मिशनरियों की सिपाहियों में कार्यवाही तेज होना। मडमंड के पत्र में लिखा होना कि चूँकि भारत में रेलवे, तार और एक कानून है तो एक धर्म भी होना चाहिए- 'ईसाई'। मेजर मेकेंजी और कर्नल व्हीलर जैसों का खुलकर ईसाईयत का सेना में प्रचार। सैनिकों से अंग्रेज़ अफ़सरों का गाली देकर बात करना। मद्रास व बम्बई की सेना के नियमों से उलट बंगाल की सेना में तरक्की का आधार

PROBLEMS OF SEPOYS

सेवाकाल का होना, पदमुक्ति की उम्र ही न थी। शाकिंसन ने लिखा है कि सूबेदार (पैदल सेना में भारतीयों को प्राप्त सर्वोच्च पद) तो 50 साल के भी थे जो मार्च तक नहीं कर पाते थे; कानपुर में जनरल व्हीलर की उम्र 75 साल थी। विद्रोह के समय भारत में अंग्रेज सैनिक मात्र 36000 थे जबकि भारतीय सैनिक 2 लाख 57 हज़ार थे जिससे उनमें जोश था। बंगाल-बिहार में अंग्रेज़ सेना नहीं के बराबर थी, अधिकांश पंजाब के पास थी। बंगाल में 1,51,361 सैनिक थे और उत्साहित थे। कुछ सिपाही अब भी बादशाह के प्रति श्रद्धा रखते थे। एक अंधविश्वास भी था कि जून 1857 प्लासी युद्ध की शताब्दी है जब अंग्रेज़ भाग जायेंगे। चुपचाप रोटियाँ और कमल सिपाहियों में बंटने लगा, यह भी असन्तोष को भड़काता था। अफ़वाह उड़ी कि क्रीमिया युद्ध में इंग्लैंड हार गया है।

## तात्कालिक कारण:-

सेना में आयी नयी इन्फील्ड बन्दूक में कारतूस भरने के लिए एक ओर दांत से काटना होता था; अफ़वाह फैली कि गोलियों में गाय व सूअर की चर्बी लगी है। हिन्दू-मुस्लिम सिपाही भड़क गए; बैरकपुर छावनी में मंगल पांडे ने बग़ावत कर दी। डब्लू॰एच॰ले की ('द मैप ऑव लाइफ़') और लार्ड राबर्ट्स ('फ़ोर्टी इयर्स इन इंडिया') में लिखा है

IMMEDIATE CAUSES

कि चर्बीवाली बात सच थी जिसे केनिंग ने बार बार नकारा था। 10 मई 1857 को मेरठ में ग़दर मच गया, रेजीमेंट के अंग्रेज़ अफ़सरों को मारकर सेना ने दिल्ली कूच किया, वहाँ भी अंग्रेज़ों को मारकर बहादुर शाह ज़फ़र को नेतृत्व सौंप दिया; लखनऊ, बरेली, कानपुर, आगरा, झाँसी, मध्य भारत, बुंदेलखण्ड और दूसरी जगहों पर विद्रोह फैल गया, अंग्रेज मारे जाने लगे, जेल तोड़कर कैदी रिहा होने लगे। कानपुर में नाना साहब, झाँसी में लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, कुँवर सिंह, अज़ीमुल्लाह खाँ, अहमद शाह व फ़ैज़ाबाद के मौलवी अहमद शाह, रुहेलखंड में खान बहादुर खाँ, बुंदेलखंड में बख्त खाँ, अवध में वाजिद अली शाह, ज़ीनत महल, हज़रत महल, अजीज़न ने अंग्रेज़ों के छक्के छुड़ा दिये, परन्तु संगठन के अभाव तथा पंजाब, बड़ौदा ग्वालियर, राजपुताना, नेपाल के साधन आकर ब्रिटिश सेना का साथ देने के नाते यह क्रांति असफल हो गयी।

## परिणाम:-

RESULTS

लार्ड केनिंग के हुक्म से हेनरी, लारेन्स, एनसन, नील, हैवलाक, निकल्सन, हडसन, कॉलिन कैम्पबेल, विन्डहम, होपग्रांट, ह्यूरोज़, ग्रेटहैड ने अंग्रेज़ी, सिख, गोरखा सेनाओं और गद्दारों को मिलाकर क्रांति को अन्ततः कुचल दिया। सर डब्लू॰ रसल ('माई डायरी इन इंडिया') ने लिखा कि अगर सारे देशवासी अंग्रेज़ों के खिलाफ़ एक हो गये होते तो हर हाल में वे पूरी तरह मिटा दिये गये होते।

एक युग का अन्त हुआ। ईस्ट इंडिया कम्पनी खत्म हो गयी। अंग्रेजों से घृणा बढ़ती गयी। क्रांति का सूत्रपात हो गया। वस्तुतः यह कम्पनी सरकार के विरुद्ध उत्तर भारत का विप्लव बन कर दब गया, बड़े प्रदेश मूक दर्शक बने रहे। इसकी कटु स्मृतियाँ अगली एक सदी तक भारतीय जनमानस को झकझोरती रहीं।

विद्रोह के परिणाम स्वरूप 1858 का ऐक्ट बना; फ़रवरी में पामस्टिन ने बिल पेश किया; आगे से भारत का राज्य 'क्राउन' के अधीन आ गया। भारत के लिए सेक्रेट्री ऑव स्टेट बनाया गया। विद्रोह का दूसरा प्रभाव ये था कि महारानी का 'घोषणापत्र' आया जिसे 1 नवम्बर 1858 को लार्ड केनिंग ने इलाहाबाद दरबार मे पढ़ा। भारतीयों के लिए यह एक अधिकार का चार्टर था। केनिंग को प्रथम वाइसराय व गवर्नर जनरल बनाया गया। अंग्रेज़ों के सीधे हत्यारोपियों को छोड़ सभी विद्रोहियों को बिना शर्त माफ़ कर दिया। मेरठ और इलाहाबाद में 'गोरों का विद्रोह' (10 हज़ार अंग्रेज़ सैनिकों का विरोध) करने पर केनिंग ने उन्हे पदमुक्त कर दिया। अंग्रेज़ों ने सावधानी पूर्वक सेना की पुनर्रचना की। सर एच॰ एस॰ कनिंघम ('अर्ल ऑव कैनिंग') में लिखा कि 'विद्रोह ने भारत के आर्थिक क्षेत्र में एक नये युग का सूत्रपात किया।' केनिंग ने कृषि संबंधी सुधार भी किये। 1859 में 'बंगाल रेन्ट ऐक्ट' द्वारा किसानो को राजस्व में स्थाइत्व तथा काश्त मे सुरक्षा प्रदान की गयी। शिक्षा व सार्वजनिक निर्माण विभाग में भी ध्यान दिया गया। शांति व व्यवस्था की गंभीर समस्या में 1860 का मैकाले निर्मित इंडियन पेनल कोड लागू हुआ। 1861 में इंडियन हाईकोर्ट्स ऐक्ट से न्यायपालिका भी पुनर्गठित की गयी। 1861 में सेंट्रल प्रोविंसेज़ तथा 1862 में ब्रिटिश बर्मा का निर्माण किया गया। केनिंग ने दुर्भिक्ष में सहायता की नीति विकसित की, 1860 में प्रथम दुर्भिक्ष आयोग बना। सर चार्ल्स वुड ने 6 जून 1861 को संसद मे कहा था कि भारत में कठिन होती जा रही स्थिति से मुख नहीं मोड़ा जा सकता; 1861 का 'इंडियन कौंसिल ऐक्ट' पारित हुआ। अतिरिक्त सदस्यों (भारतीय) के साथ वाइसराय की कौंसिल ने भारतीय विधायिका का स्वरूप ग्रहण किया। मजुमदार ('एडवान्स्ड हिस्ट्री ऑव इंडिया') ने लिखा है कि विद्रोह का सीधा प्रभाव स्पष्टतः यह था कि भारतीय राजनीति में अतिवाद का जन्म हुआ। टामसन व गैरेट ने लिखा है कि ब्रिटिश अब अलग थलग पड़ते गये, और भी विदेशी होते गये।

RESULTS